CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अथ सामुद्रिक सोपान भ्रम॥ ३॥१॥

होने ग

कालिका प्रसाद
राज ज्योतिषी
राम नगर
बनारस स्टेट

मू० ३ ४०

सुलेमानी प्रेस गाय घाट बनारस में छपा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीः॥

भूमिका ॥

...णा वरुणात्मज सच्चिदानन्द
...परमेश्वर की अपार कृपा से सामु
...द्रिक शास्त्र मे प्रवेश होनेके लिये सामुद्रिक
...पान नामक इस छोटीसी पुस्तक को लेकर -
सामुद्रिक शास्त्र जिज्ञासुओं के उपकारार्थ तथा
इस विषय के प्रचारार्थ पाठकों की सेवामें
उपस्थित होते हैं।

प्रथम इस ग्रन्थ को खूब अभ्यास कर तदनन्तर सामु-
द्रिक दर्पण नामक पुस्तक के अभ्यास से भूत,
भविष्य, वर्तमान का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होजाता है।
इस शास्त्र मे चिर काल अनुभव करने की आवश्य-
कता है॥

श्री परमेश्वर के अद्भुत सृष्टि क्रम तथा मनुष्यों के
जीवन चरित्र का यथार्थ बोध होनाही इस शास्त्र का मुख्य
उद्देश्य है। किमधिकम्॥ इतिशम्॥

कालिकाप्रसाद राजज्योतिषी
सामुद्रिक सदन
...मगर जनाना अस्पताल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री राम ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

श्री १०८ कामारूप्याचे नमः ॥१॥

॥ अथ सामुद्रिकसोपानम् ॥

गिरिजा शंकरं वन्दे कृष्णं विष्णुं सदा गुरुं
गणेशं शारदां दुर्गां सावरीं चार्यकारिणीम् ॥
तनत्या स्थिती सर्वा देवी रूपा नमो नमः ॥
नातः परतरं स्थानं पूज्यमस्ति जगत्त्रये ॥

चित्र १

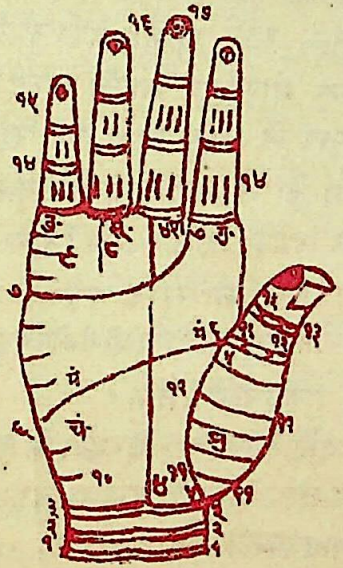

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

...ङ्गुलि रेखा और कफल॥

...थ में प्रायः तीन रेखायें होती हैं उन में-
...री शास्त्र और ३री भक्ति की जानना
...रेखाओं में जो रेखा स्वच्छ, सरल, गम्भी
...ध हो और छिन्न न हो तो वह रेखा उस
...य के उत्तम फल को देती है॥ यदि तीन से
...धिक रेखायें हों तो दारिद्र्य और दौर्भाग्य
की सूचना देती हैं॥

४-ऊर्ध्व रेखा यदि व्यक्त और अविच्छिन्न हो तो राज मान, प्रतिष्ठा को देती है मणिबन्ध से लेकर शनि स्थान तक यदि शुद्ध (कटी कुटी न हो) तो मनुष्य अत्यन्त सौभाग्य शाली होता है॥

५-पितृ मतान्तर से आयु रेखा। मातृ पितृ रेखा यदि परस्पर मिली न हों तो मनुष्य वर्ण संकर होता है॥ रेखा यदि टेढ़ी लम्बी छोटी और छिन्न भिन्न हों तो मनुष्य को माता पिता का सुख नहीं होता यही रेखा यदि उत्तम हो तो मनुष्य दीर्घ जीवी और श्रेष्ठ गुणों से युक्त और सदा सुखी रहता है॥

६-मातृ रेखा यदि उत्तम देखने में सुन्दर तथा छिन्न भिन्न न हो; हो तो मनुष्य बुद्धिमान, विचार में निपुण, प्रभावशाली और मानसिक बल से युक्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है ॥ विपरीत होने से फल भी उलटा होता है ॥

७- आयु या हृदय रे० यह निर्मल औ मनुष्य शान्त चित्त और दयालु होता है ॥

८- सरस्वती या पुराय रे० यह रेखा यदि स्थान पर शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य बुद्धि धनी यशस्वी इत्यादि शुभ गुणों से युक्त होता

९- लक्ष्मी रे० अन्य मत से- यह रेखा कुशा और मनोहर हो तो मृग पुरुष को एक रेखा से २ और २ से ३ और तीन रेखा से ५ स्त्रियां होती हैं और तुरग पु० को १ से २ और दो रेखा से १ स्त्री होती हैं। सुन्दर जितनी रेखायें हों उतना ही विवाह कहना एक प्रकार यह भी है ॥

१०- भ्रातृ भगिनी रे० आयु रेखा से नीचे मणिबन्ध रेखा तक मनोहर करभस्थान में जितनी रेखायें हों उतने ही भाई बहिन कहना

११- सन्तान रे० उच्च स्थान में मनोहर जितनी रेखायें हों उतने ही लड़की लड़के होते हैं परन्तु शुद्ध रे० होने से दीर्घायु और स्वल्प या छिन्न भिन्न हों तो अल्पायु सन्तान होती हैं ॥ विशेष सामुद्रिक रहस्य में देखें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में यव होने से मनुष्य सन्तानकरके
॥
र में यव होनेसे यशस्वी अपने कुल का
ो विनम्र पुरुष होता है॥

॥ पर्व रेखा फल ॥

मनुष्य के चारों अङ्गुलियों में पर्व रेखा तीन २
२ हों और सब बारह रेखा स्पष्ट देख पड़ें तो वह
पुष्य धन धान्यादि सम्पूर्ण सुखों से युक्त होता है तीन
अङ्गुलियों में नव रेखायें हों और चक्र रेखा भी होती हो तो
और रेखाओं के विना भी मनुष्यों के सब कार्य विना
प्रयास सिद्ध हो जाते हैं॥
अङ्गुलियों की पृथक् सब रेखायें गिनने से तेरह प्रतीत
हों तो मनुष्य बड़ा दुःखी होता है ऐसा सामुद्रिक वेत्ता-
ओं ने कहा है॥ यदि गणना में सब पन्द्रह हों तो
चोर, सोलह हो तो जूआ में ठगने वाला, सत्रह हो
तो पापी अठारह हो तो धर्मात्मा उन्नीस हो तो
अपने प्रतिष्ठित गुणज्ञ और लोक पूजित होता है
बीस हो तो तपस्वी और इक्कीस रेखा हो तो मनुष्य
महात्मा होता है॥ इसे जाल रेखा भी कहते हैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १४ शंखका फल ॥

जिस मनुष्य के हाथ में एक शङ्ख
वह मनुष्य अध्ययन शील होता है, भम्॥
होने से दरिद्र तीन होने से स्त्री के ३॥१॥
रुदन करता है और चार होतो राजा। होने
राज तुल्य प्रभुता वाला होता है॥ ४
यदि पाँच शङ्ख हाथ में हो तो समुद्र पर्यन्त
प्रभुता का सूचक है। छः शङ्ख हो तो बड़ा भारी
विद्वान हो. सात हो तो दरिद्र आठ हो तो
सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करे॥
यदि नौ शङ्ख हो तो मनुष्य स्त्री प्रकृति का
होता है और दश शङ्ख हो तो मनुष्य राजा
या कानन मध्य चारी योगी होता है ऐसा
सामुद्रिक शास्त्र वेत्ताओं का कथन है॥

॥१६ चक्र रेखा फल ॥

हाथ में एक चक्र हो तो चातुर्य युक्त, दो हो तो
अति सुन्दर तीन चक्र हो तो विलासी और चार
चक्र का धारण करने वाला मनुष्य दरिद्र हो
ता है॥
पाँच चक्रवाला मनुष्य ज्ञानी छः चक्रवाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में दश (चतुर) सात चक्र वाला पर्वत
र करने वाला और आठ चक्र वाला
होता है ॥
नव चक्र से राजा और दश चक्र हो
से मनुष्य राज सेवक होता है ॥ प्रकारान्त
सब (दशो अङ्गुलियों में चक्र हो तो मनुष्य
महाबली प्रभू होता है। इस को सिन्धु योग कहते हैं।

॥ १७ ॥ सीप फल ॥

जिसके हाथ या हाथ की अंगुली में एक सीप हो
तो वह मनुष्य राजा होता है। यदि एक ही स्थान
में दो सीप हो तो वह निश्चय दरिद्र होता है ॥
जिसके अङ्गुलियों में अलग २ दो सीप हो तो वह
मनुष्य धनी, एवं तीन सीप होने से योगी और
चार होने से दरिद्र होता है ॥
पाँच सीप वाला मनुष्य धनी छः वाला योगी
सात सीप वाला दरिद्र, आठ वाला धनी, नव
वाला योगी और दश सीप वाला मनुष्य निश्चय
दरिद्र होता है ॥ स्त्री पुत्र धन से दुःखी रहता है।
उपर लिखे शङ्ख, चक्र सीप रेखाओं की संख्या पाँच
तक एक हाथ से इसके उपर हो तो दोनों हाथों से गणना कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीराम॰॥

ललाट सम्बन्धी विचार:॥

ललाट लिखितं धात्रा रेखा चिह्नं शुभाशुभम्॥
यद्ज्ञाता पुरुषो लोके त्रिकालज्ञो भवेद्ध्रुवम्॥१॥

१- ललाट में स्वच्छ सरल गम्भीर पूर्ण तथा स्पष्ट रेखा होने से मनुष्य सुखी और दीर्घायु होता है। छिन्न भिन्न रेखा से दुःखी और अल्पायु होता है॥

२- ललाट में ऊर्ध्व रेखा त्रिशूल षट्कोण स्वस्तिक आदि शुभ रेखा से धन पुत्र स्त्री युक्त होकर मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत करता है॥ अनेक रेखा से फलभी पृथक् पृथक् अनेक होते हैं जो स्थान भाव से दिखला ये नहीं जासके॥

३- भाल रेखा द्वारा भी आयु का निर्णय होता है। जिस ग्रह की रेखा पूर्ण और मनोहर होती है वह अपना पूर्ण फल देती है॥ जिस ग्रह की रेखा छिन्न भिन्न हो वह अनिष्ट फल देती है॥ ग्रहों का फल पृष्ठ १८ में देखिये॥

४- जिन के ललाट गहिरे हों वे प्राणी वध और बन्दी गृह के भागी कठोर कर्म करने वाले और दुःखी रहते हैं। जिस के ललाट संकीर्ण हो वे कृपण और दुर्जन होते हैं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताम्र वर्ण और उन्नत ललाट सुखी मनुष्य का होता है ऊँचे ललाट वाले राजा या योगी होते हैं। यदि ललाट में सीधी गम्भीर केश पर्यन्त बराबरी में ३ रेखायें हों तो १०० वर्ष एवं ४ रेखाओं से ९० वर्ष ५ रेखाओं से ७० वर्ष ६ रेखा से ६५ और ७ रेखाओं से पूर्णायु होती है। परन्तु ये छिन्न भिन्न नहों तो। रेखा रहित ललाट दीर्घायु सूचक होता है॥

जो रे० केशपर्यन्त नहो ऐसी प्रायः १ रेखा का मान २० वर्ष का होता है इसी अनु पात से अनु भव द्वारा आगे के आयु का निश्चय करना चाहिये॥

जिस रमणी का ललाट उन्नत शिरा और रोम रहित नेत्र नील कमल के समान नासिका से कर्ण पर्यन्त भौ द्वितीया के चन्द्र तुल्य देढी और चौडी तथा परस्पर मिली न हों तो स्त्री के लिये सुख और सौभाग्य वर्धक है॥

इस का विशेष विवरण ग्रन्थान्तरों में देखिये। इति शम्॥

संक्षिप्त पुरुष ललाट तिल वर्णन॥

शनि रेखा के नीचे १ आदि २ मध्य या ३ अन्त में काला तिल हो तो क्रमशः १ कृषि सम्बन्धी लाभ २ विलास से दुर्भाग्य और ३ कारागार प्रद होता है॥ यदि ये तिल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाल हों तो सब प्रकार के अरिष्ट का निवृत्ति और विशेष शुभ प्रद होता है ॥२॥ गुरु रेखा के नीचे उक्त क्रम से तिल हों तो क्रमशः विवाह से भाग्योदय २ उद्दण्ड कठोर हृदय भ्रान्त चित्त कारक ३ विलासी और अपव्ययी होता है ॥ लाल होने से शुभ ॥

३- मङ्गल रे० नीचे तिल हों तो क्रमशः १ लड़ाई से भाग्योदय २- हिंसक और ३ झगड़ालू होता है। लाल हो तो स्त्रीयों के कारण अशान्ति प्राप्त हो ॥

४- एवं रवि रे० के नीचे हो तो क्रमशः १ उच्चाधिकारी २ विलासी और ३ इन्द्रिय लोलुप और दुर्भाग्य सूचक होता है। पूर्वोक्त दो स्थानों में ला० ति० शुभ किन्तु अन्त में अशुभ है ॥

५- एवं शुक्र रे० के नीचे क्रमशः विवाह से भाग्योदय २ कष्ट साध्य रोगी ३ स्त्री द्वारा कष्ट। यहां लाल शुभ और अन्तिम दो स्थानों में अशुभ है ॥

६- एवं बुध रे० के नीचे क्रमशः १ उद्योग से भाग्योदय २ अधिक दुःखी ३ मुकदमे बाजी। लाल शुभ है ॥

७ एवं चन्द्र रे० के नीचे क्रमशः १ व्यापार से उन्नति २ व्यभिचारी ३ दुःखी होता है। लाल हों तो श्रेष्ठ है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु रेखा में इन का: स्थान होना चाहिये कपोल में तिल होने से शोभा से युक्त अधरोष्ट में लोभी कराठ में भक्त। अन्य ग्रन्थों में तिल तथा इल्ला मासका बहुत विस्तार किया गया है-॥

स्त्री ललाट तिलादि वर्णन॥

१- शनि रेखा के नीचे १ आदि २ मध्य ३ अन्त तिल हो तो क्रमशः १ उत्तरा धिकारिणी २ गर्व युक्ता॥ विलासिनी ३ हो पति से युक्ता और विदेश गमन करने वाली होती है॥

२- गुरु रेखा के नीचे क्रमशः १ भाग्य शालिनी २ मूरखी कर्कशा आलस्य युक्ता। और ३ व्यभिचारिणी निर्लज्जा हठीली होती है॥

३- मङ्गल रेखा के नीचे क्रमशः १ भाग्य शालिनी २ गर्व युक्ता कठोर हृदया और ३ कर्कशा तथा कुलटा होती है॥

४- रवि रेखा के नीचे क्रमशः १ उत्तराधि कारिणी पति की आज्ञा मानने वाली। २ विलासिनी व्यभिचारिणी ३ दरिद्रा और दुःख भागीनी होती है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५- शुक्र रेखा के नीचे क्रमशः १भाग्य शालिनी
२- रोग युक्ता ३ विषय शीला और दुर्भाग्य वाली होती है
६- गुरु रेखा के नीचे क्रमशः १चतुरा दीर्घायु वाली २-
पितृ घातिनी और ३ क्रूरता होती है
७- चन्द्र रेखा के नीचे क्रमशः १ चिर काल तक पति
विदेश गमन करें। २ हठ स्वभाव की और नीच३
प्रसव काल में दुःख प्राप्त होता है।
जिस स्त्री की नासिका के अग्र भाग में लाल मसा
होतो वह पट रानी होती है॥ काला हो तो व्यभि-
चारिणी होती है। कान कपोल और कण्ठ में वाम
भाग मे मसा या तिल का चिह्न होतो प्रथम गर्भ
मे पुत्र होता है। ओठ पर मसा होतो सर्वस्वनष्ट
करने वाली तथा एक सन्तान वाली होती है
प्रायः काला तिल या मसा अशुभ और लाल शुभ
प्रद होता है। तिल आदि का विशेष विचार सामु-
द्रिक हस्त में या सामुद्रिक दर्पण में देखिये॥

॥ इतिशम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चि०नं०१

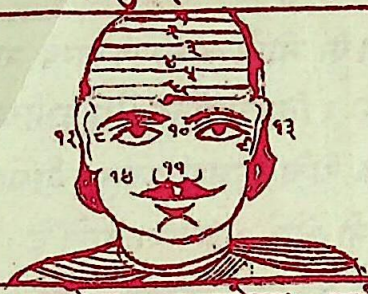

१ शनि रेखा। २ गुरु रेखा। ३ मङ्गल रेखा। ४ सूर्य रेखा। ५ शुक्र रे० ६ बुध रेखा। ७ चन्द्रमा रेखा। ८ सूर्य स्थान ९ चन्द्र स्थान। १० शुक्र स्थान। ११ बुध स्थान। १२ गुरु स्थान। १३ शनि स्थान। १४ मङ्गल स्थान॥ प्रत्येक मनुष्य के इन स्थानों में ग्रहों का निवास रहता है। इसी के द्वारा समस्त शुभा शुभ फल कहा जाता है

चि०नं०२

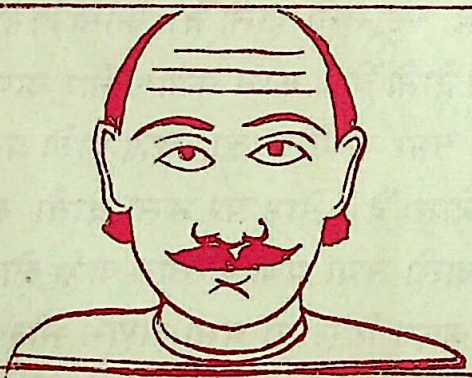

जिस पुरुष के भाल मे ३ रेखायें स्पष्ट सुन्दर बिना कटी एक छोर से दूसरी छोर तक इस ढंग की हों तो वह मनुष्य भाग्यमान, भक्त विद्या धन पुत्र स्त्री से युक्त हो कर सुखी होता है। और उस की आयु ६० वर्ष की या किसी के मत से १०० वर्ष की होती है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चि॰ नं॰ ३

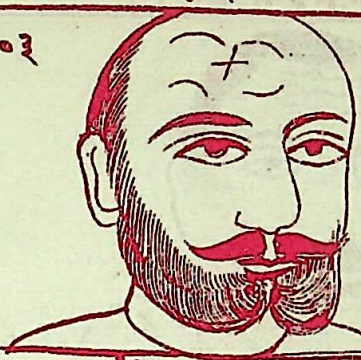

जिस के मस्तक में इस प्रकार की रेखायें पाइ जाय तो वह पुरुष हत्या करने वाला भयङ्कर कठोर हृदय तथा क्रूर स्वभाव का होता है। उसे देश निर्वासन अथवा फांसी का दण्ड मिलता है

चि॰ नं॰ ४

जिस पुरुष के ललाट मे इस तरह की रेखा स्पष्ट-दीख पड़े तो वह भाग्य शाली प्रतापी धनी और मध्यम आयु का भोगने वाला हो कर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चि॰ नं॰ ५

जिस के माथे मे इस प्रकार के चिह्न पाये जाँय तो उस मनुष्य की जल में डूबने का भय होता है। यदि ये रेखा यें गहरी और स्पष्ट दीख पड़ें तो वह जल में डूब कर मर जाता है॥

चि॰ नं॰ ६

जिस के उन्नत मस्तक में ऐसी रेखायें हों वह पुरुष बुद्धि मान विद्वान चतुर शान्त प्रकृति प्रत्युत्पन्न मति वाला अनेक गुणों से युक्त धन हीन और मध्यायु भोगने वाला होता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चि॰नं॰७

जिस के कपाल मे इस प्रकार की रेखा दिखाई पड़े वह जुआड़ी चोर वेश्या गामी कठोर हृदय उद्दण्ड स्वभाव का और मनस्वी होता है तथा उस की मृत्यु एका एक होती है॥

चि॰नं॰८

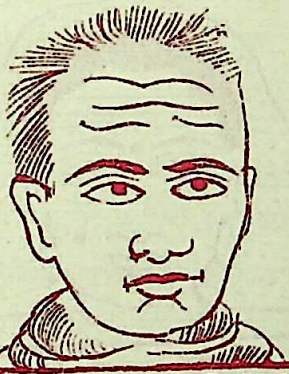

जिस मनुष्य के विशाल भाल में ऐसी रेखायें स्पष्ट रूप से दीख पड़ें तो वह प्राणी सद्गुणों से युक्त विद्वान धनी भक्त स्त्री पुत्र से युक्त प्रतापी और दीर्घायु हो कर सुखमय जीवन व्यतीत करता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चि॰ नं॰ ९

जिस स्त्री के माथे में छिन्न भिन्न रेखायें हों तथा नासिका के अग्र भाग में तिल या काला मासा हो तो वह स्त्री निश्चय विधवा होती है॥

चि॰ नं॰ १०

जिस रमणी के माथे में रेखायें स्पष्ट मनोहर और गम्भीर हों तथा वाम कपोल पर दाल के बराबर लाल तिल हो तो वह सौभाग्यवती धन पुत्र से सम्पन्न हो कर आनन्द मय जीवन व्यतीत करती है - इत्यादी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीः ॥

ग्रहों के द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभका संक्षिप्त विचार।

कर चित्र में जो ग्रहों के स्थान दिये गये हैं वे उन ग्रहों के क्षेत्र कहे जाते हैं। जो ग्रह जिस प्रकार बलवान होते हैं उसी के अनुकूल उन के वे सब क्षेत्र भी मनोहर उच्च कोमल कान्तिमान तथा शुभ रेखाओं से युक्त होते हैं॥ और जो ग्रह निर्बल होते हैं उन के स्थान भी उसी प्रकार विपरीत होते हैं॥

१- सूर्य के द्वारा राज्य मान प्रतिष्ठा कला कौशल विद्या बुद्धि धर्म कीर्ति और तीर्थ इत्यादि

२- चन्द्र के द्वारा आन्तरिक पीड़ा मन सम्बन्धी समस्त विचार मातृसुख कृषी. स्त्री धन धान्यादि॥

३- भौम ग्रह द्वारा बल पराक्रम, अग्निमान्द्य फोड़ाफुन्सी रुधिर विकार और विवाद मे जय प्रदादि॥

४- बुध के द्वारा विद्या बुद्धि वाणिज्य काव्य शिल्प तथा सौभाग्यादि।

५- गुरु के द्वारा मान प्रतिष्ठा धर्म विवाह पुत्र धन धान्यादि समस्त शुभफल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६- शुक्र के द्वारा विवाह स्नेह प्रताप सौन्दर्य्य स्त्री सुख कुटुम्ब सुख काव्य कला प्रमेह इत्यादि ज्ञान।

७- शनि के द्वारा क्लेश दुःख अनेक पीड़ा व्यसन मृत पराभव मृत्यु इत्यादि विविध बातों का विचार होता है

ये सब ग्रह इन बातों के योग. कारक कहे जाते हैं। अतः इन ग्रहों के बला बल के अनुकूल सुख दुःख का विचार किया जाता है जिस का मनन करने से अनुभव प्राप्त होता है। इन्हीं ग्रहों के द्वारा जन्म काल के वर्ष मास पक्ष. तिथि वार और समय का ज्ञान होता है॥ इस विषय के बहुत से साधन एकत्र हैं। यदि परमेश्वर की कृपा होगी तो यथा समय प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा। इस विषय का सानुद्रिक कुञ्जिका नामक ग्रन्थ तैयार हो रहा है॥

॥किमधिकम्॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाथ देखने की विधि॥

प्रथम गणेश सरस्वती, दुर्गा कामाक्षा, निजेष्ट देवता और गुरु का स्मरण सात बार हृदय में कर के रेखा देखना॥

॥ नियम ॥

बड़े प्रातः काल सायंकाल, रात्रि में मध्याह्न में जहां हँसी होती हो, यात्रा समय रथ, पर रास्ते में बिना लिखे फल पुष्प और द्रव्य के बिना रेखा नहीं देखना चाहिये। मूर्ख धूर्त पंडित और दरिद्रों की सभा में रेखा देखना उचित नहीं है। सुन्दर चिकने दांत और विहँसित मुख वाले, रूपवान्, युवा पुरुषों की रेखा देखना परमोत्तम है

नम्बर १ वाले चित्र को कई बार देख कर रेखाओं के नाम रूप और स्थान का अभ्यास पूर्ण रीति से कर लेना चाहिये। चित्रों में जो अङ्क रेखाओं के ऊपर दिये गये हैं उसी के अनुसार नीचे उनके नाम और फल दिये गये हैं जिससे कि पाठकों को हाथ देखने में सुविधा हो। पुरुषों का दाहिना और स्त्रियों का बायां हाथ देखना चाहिये॥ छिन्न भिन्न भिन्न रेखायें अपने पूर्ण शुभ फलों को नहीं देती हैं। कुशा के समान अग्र भाग वाली सुन्दर रेखाओं के होने से मनुष्य दरिद्र नहीं होते हैं॥ भाग्यादि शुभ रेखाओं के होने से विधन अर्थात स्त्री, पुत्र, धन, और पौत्रादि सुख तथा यथा सम्भव गृह भूमि वादि का मान प्रतिष्ठा अनेक प्रकार की उन्नति इत्यादि विविध शुभ फलों का ज्ञान होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीहरिः॥

सचित्र सामुद्रिक रहस्य ॥

द्वितीय संस्करण। अनेक नवीन विषयोंसे युक्त ॥

भाषाटीकासहित

इस ग्रन्थ में शशक, मृग, वृषभ तुरग पुरुष तथा पद्मिनी चित्रिणी, हास्तनी और शङ्खिनी जाति कीस्त्रियों का जीवन चरित्र और उनके नख शिखादि वर्णन तथा विधवा, सधवा, पुंश्चली, देवी देवादि-लक्षण ललाट सम्बन्धी विचार तथा अनेक भाल रेखा ओं के चित्र और उनसे शुभ शुभ का ज्ञान सबञ्च समस्त रेखा ओं के नाम, रूप, स्थान और फल अत्यन्त सरल रीति से चित्रों में दर्शाये गयेहैं॥

इस ग्रन्थ के विषय में केप्टन हिज़ हाइनेस १०८ महाराजा बहादुर काशी नरेश काशिस्थ-तथा अन्यान्य प्रान्तों के महा महो पाध्याय और इतर सुप्रतिष्ठित मर्मज्ञ विद्वानों की सम्मतियां-तथा प्रशंसा पत्र उन की अनुपम क्रिया के फल स्वरूप प्राप्त है जो ग्रन्थ में दिये गये हैं॥

मूल्य ॥) मात्र पोष्टेज अलग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामुद्रिक दर्पण

इस पुस्तक के द्वारा केवल हिन्दी पढ़ने वाले भी लक्षण तथा पुस्तक में दिये हुए हाथ के चिन्हों को देखकर भली भाँति भूत भविष्य वर्तमान-फल जान सकते हैं ॥

इन ग्रन्थों को कोई छापने का साहस न करे

मूल्य ॥) मात्र

॥ सर्वाधिकार सुरक्षित ॥

॥ प्रकाशक ॥

पं० कालिका प्रसाद राज ज्योतिषी

सामुद्रिक सदन, रामनगर बनारस स्टेट

CC-0. Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूचना:-

इस कार्यालय में ज्योतिष सम्बन्धी सभी कार्य शुद्धता पुर्वक किये जाते हैं जन्म पत्र वर्ष फल प्रश्न मुहूर्त व्यापारियों के लाभार्थ तेजी मन्दी कौन वस्तु कब खरीदने पर हानि या लाभ होगा इत्यादि सभी बातें यथार्थ और ठीक समय पर बताये जाते हैं। दक्षिणा कार्यानुसार-॥

यदि आर्ट पेपर पर मोहर छापने वाली स्याही से पुरुष अपने दाहिने तथा स्त्री अपने बायें हाथ का साफ फोटो छापकर अपना नाम तथा उमर लिख कर भेजेंगे तो, सुख, दुःख, हानि, लाभ, स्त्री पुत्र, धन, नौकरी, तथा व्यापार सम्बन्धी सभी बातें स्पष्ट रूप से लिखकर भेजी जाती हैं।

पत्रोत्तर के लिये टिकट भेजना चाहिये:। दक्षिणा रु०। पोष्टेज अलग॥ दक्षिणा बिना हाथ देखाना समुचित नहीं है।

सं० १९९० वि० बासन्तिक नवरात्र

कालिका प्रसाद राज ज्योतिषी
सामुद्रिक सदन
राम नगर- बनारस स्टेट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi